Q. निरीक्षण क्या है? अवलोकन। इसके गुण और दोष को लिखें। –

Ans→ हम सदैव अपने चारों ओर होने वाली क्रियाओं एवं घटनाओं का निरीक्षण करते रहते हैं। संसार कि समस्त क्रियाकलाप अवलोकन पर ही निर्भर करती है प्रातः उठते ही प्राकृतिक खिड़की खोलकर क्या प्रकृति की छटा तथा मौसम की दशा का अवलोकन करते हैं। हम सड़क पर खेलते भागते बालकों का अवलोकन करते हैं। क्रिकेट मैदान में खेलते हुए खिलाड़ी का अवलोकन करते हैं। अर्थात जब तक हम जगते रहते हैं अवलोकन ही क्रिया करते हैं कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन में हर पल निरंतर रूप से अवलोकन के माध्यम से ही हम अपना ज्ञान भंडार भरते रहते हैं।

अवलोकन केवल नित्य प्रति जीवन का एक अवयवहार होता ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक खोज की प्रारंभिक मेरु है। और अवलोकन एक वैज्ञानिक विधि बन जाता है यदि —

(i) अनुसंधान के समस्या के निर्धारण का काम करें।

(ii) इसकी योजना व्यवस्थित हों।

(iii) इसका लेखन व्यवस्थित हो तथा सामान्य तथ्यों से संबंधित हों।

(iv) इसके द्वारा वैधता तथा विश्वसनीयता जाँच हो सके।

वास्तव में अनुसंधान में एक उपकरण के रूप में इसका संबंध व्यक्ति के बाह्य व्यवहार से है। इसका संबंध इसकी भावनाओं, संवेदनाओं तथा लिखित अभिव्यक्ति से नहीं है यदि हमारी रुचि इस बात में है कि भिन्न समूहों के सदस्य एक दूसरे से कैसा व्यवहार करते हैं तो हमें अवलोकन का ही सहारा लेना पड़ता है।

अनुसंधान की वैज्ञानिक प्रणाली के अतिरिक्त यह वैज्ञानिक विज्ञान का क्षेत्र भी है। प्राकृतिक विज्ञान के अतिरिक्त क्षेत्रों में इसका प्रयोग होता आया है।

Good and Hatt के अनुसार → "विज्ञान का प्रारंभ अवलोकन से होता है तथा इसकी पुष्टि के लिए अवलोकन में लौटना पड़ता है।"

"Science begins with observation and must ultimately ~~return~~ return to observation for its find validations."

उपयोगिता एवं विशेषता →

(i) अवलोकन द्वारा व्यवहार को उसी रूप में उल्लेखित किया जाता है जो जिस रूप में अवतरित होता है। अनुसंधान की अधिकांश विधियाँ अंतःदर्शन पर निर्भर करती हैं। इन विधियों में अनुसंधान की आशा का अंश भी सम्मिलित रहता है यह वर्णनात्मक अनुसंधान का प्रमुख साधन है।

(ii) अवलोकन विधि द्वारा विशेष प्रकार के व्यवहार संबंधित तथ्यों का संग्रह किया जाता है कुछ व्यवहार ऐसे होते हैं उन्हें शब्दों में व्यक्त नहीं किया जाता।

जैसे — रीति रिवाज, बच्चों के प्रति माँ का व्यवहार।

ऐसे व्यवहारों का अध्ययन केवल अवलोकन द्वारा ही हो सकता है।

(iii) शिशुओं और पशुओं की व्यवहार की मुख्य विधि अवलोकन है क्योंकि छोटे बालकों और पशु बोल नहीं सकते हैं अतः ऐसे अनुसंधान जो इनसे संबंधित होते हैं।

Scanned with CamScanner

अवलोकन विधि का ही प्रयोग करते हैं। अध्ययन इसी विधि द्वारा किये हारलों के प्रयोगशाला मे बंदरो पर अनेक अध्ययन इसी विधि द्वारा किये गये है। S. D Singh बंदरो के व्यवहारों संबंधी प्राकृतिक परिस्थितियों मे इसी विधि द्वारा किया जा रहा है।

(iv) अवलोकन विधि द्वारा इन परिस्थितियों का अध्ययन किया जा रहा है। जिनसे कि Student उत्तर देने के लिए तैयार नहीं था। सहयोग न देना ही व्यक्तियों के कारण Interview देने पर सहयोग न हो ऐसी स्थितियों मे अवलोकन सर्वोत्तम विधि हैं।

(v) इसके द्वारा विदेशियों का भी अध्ययन किया जाता हैं जो अनुसंधानकर्ता की परिभाषा नहीं जानते हैं।

(vi) अवलोकन विधि का प्रयोग विभिन्न प्रकार के अनुसंधान के लिये किया जाता है इसका प्रयोग एक प्रकार के अनुसंधान के लिए किया जाता हैं। कहीं अन्य विधियों से प्राप्त प्रदत्तों की पुष्टि के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता हैं इस विधि का प्रयोग प्रयोगशाला अध्ययनों और वास्तविक जीवन के अध्ययन के लिए किया जाता हैं। अवलोकन विधि में अवलोकन कर्ता स्वयं भाग ले सकता हैं और अध्ययन किये जाने वाले समूह से अलग रहकर भी इसका अध्ययन कर सकता हैं। सामान्य रूप से अवलोकन की संरचना और भाग लेने की मात्रा अध्ययन के उद्देश्य पर निर्भर करती हैं। खोजात्मक अध्ययन मे समूह के सदस्यों को यह भी ज्ञात हो सकता हैं कि इन्हें अवलोकित किया जा रहा है। इससे यह विशेषताएँ स्पष्ट नहीं हैं।

Limitation → Limitation of observation

observation की कुछ कमियाँ है जो निम्नलिखित हैं।

अवलोकन विधि के अतिरिक्त कुछ कमियाँ रही हैं। ऊपर कहा गया है कि अवलोकन विधि कि सबसे बड़ी विशेषता यह है कि घटना को हम उसी रूप मे ग्रहीत कर सकते है जिस रूप मे वह घटित होती हैं। परंतु यही सत्य उसकी एक बड़ी कमी बन जाती हैं। घटना या व्यवहार किस प्रकार समय घटेगा इस संबंध में कोई पूर्व कथन नहीं किया जा सकता।

उदाहरण → यदि कोई समाज मनोवैज्ञानिक भूकंप या बाढ़ के प्रभावों का समूह के व्यवहारों पर अध्ययन करना चाहता है जब तक भूकंप या बाढ़ न आ जाए। यह अवस्था उसके धैर्य एवं संवेगात्मक तदात्मय एक कठिन परीक्षा होगी। नित्य प्रति के व्यवहारों के निरीक्षण भी कठिन हो जाती हैं क्योंकि उनमें अनपेक्षित घटकों के सम्मिलित होने की सम्भावना होती हैं।

अवलोकन की दूसरी कमी घटना के काल की है। जीवन इतिहासों का अध्ययन इस विधि से कदाचित ही नहीं किया जा सकता।

कामुक व्यवहार, परिवार की मुसीबत आदि ऐसे पहलू हैं ज

Scanned with CamScanner

जिन्हें प्रत्यक्ष रूप से अवलोकन नहीं किया जा सकता है।
अवलोकन निरीक्षण कर्ता के ज्ञान उद्देश्य प्रत्यक्षीकरण पर निर्भर करता है। यदि यह तीनों घटक उद्देश्य के अनुरूप नहीं है तो परिणाम त्रुटि रूप से प्राप्त हो सकता है।

अवलोकन विधि इन व्यवहारों का अध्ययन नहीं किया जा सकता है जो बाह्य रूप से दर्शनीय नहीं है।

जिस परिस्थिति में अवलोकन करना चाहते हैं उसमें विषयी उपलब्ध ही नहीं होता। यदि उपलब्ध हुआ भी तो वह अवलोकन करने के लिए मना कर सकता है। यदि हम उसका अवलोकन कर रहे तो सही व्यवहार को छुपा भी सकता है। दूसरे शब्दों में उसका व्यवहार कृत्रिम हो ~~सकता है~~ जाता है।

इन बातों को ध्यान में रखकर रखते हुए जहोदा (Jahoda) आदि ने कहा है कि निम्न छः बातों का ध्यान अवलोकन कर्ता को रखना चाहिए!

(i) क्या अवलोकन करना है।? अर्थात् व्यवहार के कौन सा पक्ष का अवलोकन करना है।
(ii) किन परिस्थितियों में अवलोकन करना तथा उसकी रूप रेखा क्या होगी।
(iii) सही व्यवहार का अवलोकन हो रहा है। इसका प्रमाण क्या है।
(iv) अवलोकन की यथार्थता की निश्चितता के लिए कौन सी विधि अपनाई जानी चाहिए।
(v) समस्या का स्वरूप क्या है। जिसके लिए अवलोकन किया जा रहा है तथा प्राप्त सामग्री का नामकरण कैसे करना है।
(vi) अवलोकन में स्थिरता कितनी है? उसकी विश्वसनीयता तथा वैधता कितनी है।

अच्छे अवलोकन के चार महत्वपूर्ण तत्व है।
(i) समुचित नियोजन।
(ii) व्यवस्थित संचालन!
(iii) समुचित लेखन!
(iv) वैज्ञानिक विश्लेषण!

Scanned with CamScanner